महिला-रचनाकार :अपने आइने में

संपादक

डॉ. अरविंद

महिला-रचनाकार :
अपने आइने में

महिला-रचनाकार : अपने आइने में

संपादक

डॉ. अरविंद

भारत विद्या इंटरनेशनल
कोलकाता

ISBN : 978-81-910021-5-7

© डॉ. अरविन्द

पहला संस्करण : 2011

मूल्य : 250/-

प्रकाशक

भारत विद्या इंटरनेशनल

131, चित्तरंजन एवेन्यू,
कोलकाता 700 073

एक मात्र वितरक :

मानव प्रकाशन

131, चित्तरंजन एवेन्यू, प्रथम तल,
कोलकाता 700 073
फोन नं. : (033) 22684822
09831581479
ई-मेल prakashanmanav@yahoo.co.in

मुद्रक

मानव स्टुडियो,
कोलकाता-700 073

'Mahila Rachnakar : Apne Aaine mein' edited by Dr. Arvind

**सभी महिला लेखिकाओं
को जिन्होंने हिन्दी साहित्य में
अपनी जगह सुनिश्चित की**

मनोगत

बहुत दिनों से इच्छा थी कि "कथाबिंब" के 'आमने-सामने' स्तंभ में प्रकाशित लेखक-लेखिकाओं के आत्मकथ्यों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाये। 1980 से आरंभ होकर अब तक लगभग 80 रचनाकारों के आत्मकथ्य या कहें कि संघर्ष-गाथाएँ इस स्तंभ में प्रकाशित हो चुकी हैं। अवश्य ही इसे अपने में एक कीर्तिमान समझा जाना चाहिए। स्तंभ कैसे शुरू हुआ इसके पीछे भी एक मजेदार कहानी या कहिए कि संयोग है। समांतर के दिनों के मेरे लेखक-मित्र मिथिलेश्वर ने "कथाबिंब" में प्रकाशन के लिए रचना भेजी थी 'लेखक होने की नियति'। इस रचना के माध्यम से मिथिलेश्वर के बारे में बहुत कुछ ऐसा जानने को मिला जिसे मैं पहले नहीं जानता था। शुरू के काफी दिनों तक उनके पास नौकरी नहीं थी। मध्य प्रदेश साहित्य परिषद द्वारा पुरस्कृत होने के बावजूद वे क्लर्क की नौकरी के लिए इधर-उधर प्रयास करते रहे। विवश हो एक दिन अपनी डायरी में लिखा कि– किसी को श्रद्धा देना, चर्चा करना, योग्य मानना अलग बात है और उसे नौकरी देना अलग बात। पत्रिका में प्रकाशन के लिए भेजे अपने आत्मकथ्य के अंत में उन्होंने लिखा था– "इस रचना के माध्यम से मैं लेखक बनने की प्रक्रिया में जुटे उन तमाम लोगों से हाथ जोड़कर यह प्रार्थना करता हूँ कि बंधु, आप चोर-डाकू बन जायें, लेकिन लेखक न बनें।" यह बात मुझे कहीं बहुत अंदर तक छू गयी। मुझे लगा कि हर संघर्षशील रचनाकार अवश्य ही पाठकों से रूबरू होना चाहेगा। क्योंकि अक्सर यह होता है कि पाठकों से लेखक अपनी रचनाओं के माध्यम से ही बात नहीं करना चाहता बल्कि सीधे पाठक के सामने अपने मन की गांठें खोलना चाहता है। मिथिलेश्वर की रचना 'लेखक होने की नियति', 'आमने-सामने' स्तंभ के 'प्रारंभ' की नियति बनी। 1980 में शुरू होकर यह स्तंभ आज भी "कथाबिंब" में जारी है।

अब तक "कथाबिंब" में प्रकाशित सभी महिला रचनाकारों के आत्मकथ्यों को इस पुस्तक में शामिल किया गया है। जैसी कि हमारे देश की स्थितियाँ हैं बगैर संघर्ष के पुरुष और महिला दोनों ही रचनाकारों को साहित्य और खासकर हिंदी

साहित्य में अपने आप को स्थापित कर पाना, एक जगह बना पाना बहुत ही कठिन व श्रमसाध्य कार्य है। यह स्वाभाविक है कि हर संवेदनशील व्यक्ति जो लिखना-पढ़ना जानता है अपने भावों को कागज पर उतार कर दूसरों तक पहुँचाना चाहता है। लेकिन वर्तमान विषम स्थितियों में यह संभव नहीं है कि मात्र साहित्य-सृजन की आमदनी से कोई भी पुरुष अपना या अपने परिवार का भरण-पोषण कर सके। यह आवश्यक है कि साहित्य-सृजन के अलावा उसके पास आय का कोई अन्य जरिया हो। अन्यथा बहुधा, *'भूखे पेट न होये भजन गोपाला'* जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। आपसे कोई पूछे कि आप क्या करते हैं और जवाब में यदि आप कहें कि आप लेखक हैं तो तुरंत ही फिर से प्रश्न किया जायेगा कि लेखक हैं, वह तो ठीक है पर करते क्या हैं? कहने का मतलब यह कि पुरुष लेखकों को साहित्य-सृजन के साथ-साथ नौकरी या अन्य कुछ करना बहुत ज़रूरी है। एक हद तक यह विरोधाभास लग सकता है क्योंकि लेखन पर्याप्त समय, चिंतन, एकाग्रता और मेहनत की मांग करता है। अगर आदमी जीवनोपार्जन की ओर ध्यान केंद्रित करेगा तो फिर वह अच्छा लेखन कैसे कर पायेगा? सारा समय वह इसी ऊहापोह में रहेगा कि परिवार का भरण-पोषण कैसे हो। बहुत ही निष्ठावान और साहित्य-सृजन के प्रति प्रतिबद्ध रचनाकार ही विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष कर सामने आ पाते हैं और प्रतिष्ठित होते हैं।

महिला लेखिकाओं के साथ अधिकांशतः परिवार के लिए नून, तेल, लकड़ी जुटाने की समस्या नहीं होती लेकिन अन्य दूसरी तरह की दिक्कतें पेश आती हैं। अनेक तरह की पारिवारिक जिम्मेदारियों को अच्छी तरह निभाने के साथ उनके लिए लेखन के लिए समय निकाल पाना कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण होता है। आज के माहौल में तो यह भी आम हो गया है कि परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पति-पत्नी दोनों को ही नौकरी करनी पड़ती है। कई बार, महिला लेखिकाओं को विपरीत माहौल के कारण घर वालों से सहयोग नहीं मिलता फिर भी उनका साहित्य-सृजन पीछे नहीं रहता और इस तरह उन्हें दोहरी चुनौती उठानी पड़ती है। संक्षेप में, चाहे पुरुष लेखक हो या महिला दोनों ही को संघर्ष करना पड़ता है, केवल संघर्ष का स्वरूप भिन्न हो सकता है। भट्टी की आग में तप कर ही सोना खरा होता है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में कहानीकार सुश्री सुधा अरोड़ा का निरंतर सहयोग मिलता रहा है मैं उनके प्रति आभारी हूँ। मानव प्रकाशन के भाई अनुज कुमार और उनकी पत्नी रेखा ने भी पूरा सहय़ोग दिया उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

—डॉ. अरविंद
प्रधान संपादक "कथाबिंब",
ए-10, बसेरा,ऑफ दिन-क्वारी रोड,
देवनार, मुंबई- 400 088.

अनुक्रम

लिखना ही जीवन है...	डॉ. कृष्णा अग्निहोत्री	11
मैं और मेरा सच	मणिका मोहिनी	17
कहानी में ढली मेरी संवेदनाएं	मंगला रामचंद्रन	23
यादों के दायरे में	उषा भटनागर	29
गुमशुदा दोस्त की तलाश	सुधा अरोड़ा	45
मेरा परिवेश ही मेरा रचना-संसार	मैत्रेयी पुष्पा	72
खुद के कटघरे में	संतोष श्रीवास्तव	77
गाँव का परिवेश ही मेरे रचना....	उर्मिला शिरीष	85
अंतिम क्षणों तक लेखनी मेरे हाथों...	नरेंद्र कौर छाबड़ा	93
हर फिक्र को धुएं में	अलका अग्रवाल सिगतिया	104
मेरा वक़्त मुझसे बिछुड़ गया	प्रमिला वर्मा	119
मेरी आत्मा से लगी हैं मेरी कविताएं	सुमन सरीन	128